To,

The Principal Secretary,
Raj Bhavan, Bihar,
Patna

Sub:-**Regarding submission of proposed course uniform syllabus of** PRAKRIT & JAINOLOGY **for 3rd to 8th Semester of 4 - Year undergraduate Course, (CBSC)**

Reference:- Letter No.-BSU (UGC) -02/2023- 1457/ GS(I) dated 14.09.2023

Sir,

In compliance with your letter no. BSU(UGC)- 02/2023-1457/ GS(I) dated-14.09.2023 followed by above mentioned letter no, we are submitting the proposed course syllabus of PRAKRIT & JAINOLOGY for 3rd to 8th semester of the 4 - year under graduate course (CBCS) as per UGC regulations.

Yours sincerely

21/9/23

Bhouddhary
21/09/23

स्नातक चतुर्थ वर्षीय

पाठ्यक्रम

पर आधारित

(CBCS)

विषय - प्राक्कृत एवं जैनशास्त्र

MK 21/9/2023
Dr. Manju Bala
Research Institute of Prakrit Jainology & Ahimsha. Vaishali

Choudhary 21/09/23
Dr. Dudh Nath Choudhary.
HOD. Dept. of. Prakrit & Jainology. VKSU. Ara

स्नातक चतुर्थ वर्षीय पाठ्यक्रम

(CBCS)

पर आधारित

विषय - प्राकृत एवं जैनशास्त्र

उद्देश्य -

प्राकृत एवं जैनशास्त्र विषय एक प्राच्य भाषा है, जो हमारी भारतीय संस्कृति का पोषक एवं धरोहर है। किसी भी समाज का साहित्य उसका दर्पण होता है। प्राकृत साहित्य में जैनशास्त्र का ग्रंथ रचित है। प्रारंभिक रूप में प्राकृत बोली के रूप में अनादि काल से है, जब से सृष्टि की रचना हुई है, तब से ही प्राकृत का उद्‌भव हुआ। प्रारम्भ में प्राकृत बोली और आगे चलकर इसे भाषा का अमली जामा मिला, जिसमें अनेक साहित्यों खासकर जैन साहित्य, दर्शन आदि की रचना हुई है। जैनशास्त्र के सिद्धांत आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना प्राचीन काल में था। इसलिए आज भी जैनशास्त्रों में वर्णित मानवीय मूल्यों का बहुत ही महत्व है। इसमें अहिंसा का बहुत ही सूक्ष्म एवं गूढ़ अर्थों की व्याख्या है।

<u>पाठ्यक्रम का परिणाम</u> -

प्रस्तावित पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के पठन-पाठन के पश्चात् उनके व्यक्तिगत जीवन में सदाचार, उच्च विचार तथा चरित्र निर्माण के अत्यधिक प्रभावी होगा। जब बच्चे चरित्रवान बनेंगे तो एक स्वस्थ समाज का निर्माण होगा तब ही जाकर समाज में फैली बुराईयां विकृतियां दूर होगी और एक नया भारत, नया राष्ट्र तथा नये समाज की कल्पना की जा सकती है। इन सबके कारण में है- भगवान् महावीर का उपदेश तथा उनके द्वारा स्थापित दर्शन, जिसे जैन दर्शन कहा गया है। अगर इस भाषा और विषय की चर्चा तथा पठन-पाठन भारत के तमाम शैक्षणिक संस्थानों में लागू किया जाय, तो इसका परिणाम और भी व्यापक निकलेगा।

21/9/2023

21/09/23

(A) Major Core Course

B.A. द्वितीय वर्ष - सेमेस्टर - III

Sl. No	SEM	Type of Course	Name of Course	Credit	L.T.P.	Marks
3	III	MJC- III	अर्धमागधी आगम के अंग साहित्य भगवान् महावीर का मूल उपदेश प्राकृत महाकाव्य जैन दर्शन एवं अपभ्रंश ग्रन्थ	6		100
			इकाई- I - आचारांग सूत्र के प्रथम श्रुतस्कंध का प्रथम अध्ययन-शस्त्र परिज्ञा एवं नवम अध्ययन-उपधान्नश्रुत		9-3-0	
			इकाई- II - भगवान् महावीर का मूल उपदेश - धर्म का आचरण, कर्म, आत्मा, कषाय, अहिंसा एवं सत्य		9-3-0	
			इकाई- III - प्रवरसेन विरचित सेतुबन्ध महाकाव्य का प्रथम दो आश्वास		9-3-0	
			इकाई- IV - आचार्य कुन्दकुन्द विरचित समयसार का प्रथम अधिकार- जीवाजीवाधिकार		9-3-0	
			इकाई- V - योगीन्दुदेव विरचित योगसार का प्रथम 50 गाथा।		9-3-0	
			कुल	6	60	

सन्दर्भ ग्रंथ

1. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री, तारा पब्लिकेशन, सिगरा-वाराणसी।
2. आचारांग सूत्र - श्री आगम प्रकाशन समिति व्यावर (राजस्थान)
3. सेतुबन्ध - डॉ० हरिशंकर पाण्डेय - श्रीनाथ पब्लिकेशन, शान्तिकुटीर, कतीरा, आरा
4. सेतुबन्ध - डॉ० राजाराम जैन - प्राच्य साहित्य प्रकाशन, महाजनटोली नं. 2, आरा
5. भगवान् महावीर का मूल उपदेश - डॉ० हरेन्द्र प्रसाद सिंह, प्राच्य साहित्य प्रकाशन, गाँधी नगर, आरा
6. अर्धमागधी प्राकृत साहित्य का इतिहास - डॉ० विश्वनाथ चौधारी एवं डॉ० मंजुबाला, प्राकृत जैन शास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली
7. शौरसेनी प्राकृत साहित्य का इतिहास - डॉ० विश्वनाथ चौधारी एवं डॉ० मंजुबाला, प्राकृत जैन शास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली
8. योगसार - कमलेश कुमार जैन, गणेशवर्णी संस्थान, नरीया, वाराणसी,

21/09/23

21/9/23

9. अर्धमागधी आगम के संकलित गद्य एवं पद्य - डॉ० सी०डी० राय एवं डॉ० हरेन्द्र प्रसाद सिंह, प्राच्य साहित्य प्रकाशन, गाँधी नगर, आरा
10. समयसार - भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
11. प्राकृत आगमों की कथा कहानियाँ - डॉ० मंजुबाला, प्राकृत जैन शास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली

(B) Minor Course

B.A. द्वितीय वर्ष - सेमेस्टर - III

Sl. No	SEM	Type of Course	Name of Course	Credit	L.T.P.	Marks
3	III	MIC- III	अर्धमागधी आगम के अंग साहित्य भगवान् महावीर का मूल उपदेश जैन दर्शन इकाई- I - आचारांग प्रथम श्रुतस्कंध का प्रथम अध्ययन-शास्त्र परिज्ञा एवं नवम अध्ययन-उपधानश्रुत इकाई- II - भगवान् महावीर का मूल उपदेश- धर्म का आचरण, कर्म, अहिंसा एवं सत्य इकाई- III - आचार्य कुन्दकुन्द विरचित समयसार का प्रथम अधिकार- जीवाजीवाधिकार	3	 9-1-0 9-1-0 9-1-0	100
			कुल	3	30	

सन्दर्भ ग्रंथ

1. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री, तारा पब्लिकेशन, सिगरा-वाराणसी।
2. आचारांग सूत्र - आगम प्रकाशन समिति व्यावर (राजस्थान)
3. भगवान् महावीर का मूल उपदेश - डॉ० हरेन्द्र प्रसाद सिंह, प्राच्य साहित्य प्रकाशन, गाँधी नगर, आरा
4. अर्धमागधी प्राकृत साहित्य का इतिहास - डॉ० विश्वनाथ चौधारी एवं डॉ० मंजुबाला, प्राकृत जैन शास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली
5. शौरसेनी प्राकृत साहित्य का इतिहास - डॉ० विश्वनाथ चौधारी एवं डॉ० मंजुबाला, प्राकृत जैन शास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली
6. अर्धमागधी आगम के संकलित गद्य एवं पद्य - डॉ० सी०डी० राय एवं डॉ० हरेन्द्र प्रसाद सिंह, प्राच्य साहित्य प्रकाशन, गाँधी नगर, आरा
7. समयसार - भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली

21/9/23

Choudhary 21/09/23

(A) Major Core Course

B.A. द्वितीय वर्ष - सेमेस्टर - IV

Sl. No	SEM	Type of Course	Name of Course	Credit	L.T.P.	Marks
4	IV	MJC- IV	अर्धमागधी आगम के अंग साहित्य भगवान् महावीर का मूल उपदेश प्राकृत खण्ड काव्य प्राकृत चम्पू काव्य जैन दर्शन एवं अपभ्रंश ग्रन्थ	6		100
			इकाई- I - आजीविओवासए सकडालपुतस्स कहा		9-3-0	
			इकाई- II - भगवान् महावीर का मूल उपदेश- अचौर्य, ब्रह्मचर्य, तपस्या, अपरिग्रह एवं अप्रमाद		9-3-0	
			इकाई- III - रामपाणिवाद कृत कंसवहो - प्रथम सर्ग एवं कुवलयमाला का प्रथम अर्धांश		9-3-0	
			इकाई- IV - सूत्रकृतांग सूत्र का प्रथम श्रुतस्कंध - प्रथम 50 गाथा।		9-3-0	
			इकाई- V - स्वयंभूकृत पउमचरिउ- 22वी एवं 23वीं संधि		9-3-0	
			कुल	6	60	

सन्दर्भ ग्रंथ

1. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री, तारा पब्लिकेशन, सिगरा-वाराणसी।
2. आजीविओवासए सकडालपुतस्स कहा - डॉ० दुधनाथ चौधरी, प्रकाशक- प्राच्य विद्या अध्ययन केन्द्र, कैलाश नगर, गोढ़ना रोड, आरा - 802301
3. भगवान् महावीर का मूल उपदेश - डॉ० हरेन्द्र प्रसाद सिंह, प्राच्य साहित्य प्रकाशन, गाँधी नगर, आरा
5. कंसवहो - डॉ० हरेन्द्र प्रसाद सिंह, प्राच्य साहित्य प्रकाशन, गाँधी नगर, आरा
7. कुवलय माला - उद्योतन सूरि, सिंधी ग्रन्थ माला, भारती विद्या भवन, बम्बई

Choudhary 21/09/23

21/9/23

7. अर्धमागधी प्राकृत साहित्य का इतिहास - डॉ० विश्वनाथ चौधारी एवं डॉ० मंजुबाला, प्राकृत जैन शास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली
8. सूत्र कृत्तांग - श्री आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर, राजस्थान
9. शौरसेनी प्राकृत साहित्य का इतिहास - डॉ० विश्वनाथ चौधारी एवं डॉ० मंजुबाला, प्राकृत जैन शास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली
10. पउमचरिउ - महाकवि स्वयंभू - डॉ० एच०सी० भयाणी - भारतीय ज्ञान पीठ, दिल्ली

(B) Minor Core Course

B.A. द्वितीय वर्ष - सेमेस्टर - IV

Sl. No	SEM	Type of Course	Name of Course	Credit	L.T.P.	Marks
4	IV	MIC- IV	अर्धमागधी आगम के अंग साहित्य भगवान् महावीर का मूल उपदेश प्राकृत खण्ड काव्य एवं चम्पू काव्य इकाई- I - आजीविओवासए सकडालपुतस्स कहा इकाई- II - भगवान् महावीर के मूल उपदेश- अचौर्य, ब्रह्मचर्य, तपस्या, अपरिग्रह एवं अप्रमाद इकाई- III - रामपाणिवाद कृत कंसवहो - प्रथम सर्ग एवं कुवलयमाला का प्रथम अर्धांश	3	9-1-0 9-1-0 9-1-0	100
			कुल	3	30	

सन्दर्भ ग्रंथ

1. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री, तारा पब्लिकेशन, सिगरा-वाराणसी।
2. आजीविओवासए सकडालपुंतस्स कहा - डॉ० दुधनाथ चौधरी, प्रकाशक- प्राच्य विद्या अध्ययन केन्द्र, कैलाश नगर, गोढ़ना रोड, आरा - 802301
3. भगवान् महावीर का मूल उपदेश - डॉ० हरेन्द्र प्रसाद सिंह, प्राच्य साहित्य प्रकाशन, गाँधी नगर, आरा
5. कंसवहो - डॉ० हरेन्द्र प्रसाद सिंह, प्राच्य साहित्य प्रकाशन, गाँधी नगर, आरा
6. अर्धमागधी प्राकृत साहित्य का इतिहास - डॉ० विश्वनाथ चौधारी एवं डॉ० मंजुबाला, प्राकृत जैन शास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली

21/9/23 21/09/23

(A) Major Core Course

B.A. तृतीय वर्ष - सेमेस्टर - V

Sl. No	SEM	Type of Course	Name of Course	Credit	L.T.P.	Marks
5	V	MJC- V	अर्धमागधी आगम साहित्य का मूल सूत्र शौरसेनी आगम साहित्य सट्टक प्राकृत महाकाव्य एवं अपभ्रंश ग्रन्थ	6		100
			इकाई- I - उत्तराध्ययन सूत्र - विनयसूत्र, हरिकेशीय संवाद, रहनेमिज्जं, केसिगौतमीय संवाद		9-3-0	
			इकाई- II - प्रवचनसार- प्रथम अधिकार - ज्ञानाधिकार		9-3-0	
			इकाई- III - कवि राजशेखर कृत कर्पूरमंजरी - प्रथम दो यवनिका		9-3-0	
			इकाई- IV - कवि कोउहल कृत लीलावई कहा - प्रथम 100 गाथा		9-3-0	
			इकाई- V - मुनिराम सिंह विरचित पाहुडदोहा संग्रह - प्रथम 100 गाथा		9-3-0	
			कुल	6	60	

सन्दर्भ ग्रंथ

1. प्राकृत जैनागम साहित्य - डॉ० हरिशंकर पाण्डेय, लक्ष्मी पब्लिकेशन, कतीरा, आरा
2. उत्तराध्ययन सूत्र - श्री आगम प्रकाशन समिति व्यावर (राजस्थान)
3. अर्धमागधी आगम के संकलित गद्य एवं पद्य - डॉ० सी०डी० राय एवं डॉ० हरेन्द्र प्रसाद सिंह, प्राच्य साहित्य प्रकाशन, गाँधी नगर, आरा - 802301
4. अर्धमागधी प्राकृत साहित्य का इतिहास - डॉ० विश्वनाथ चौधरी एवं डॉ० मंजुबाला, प्राकृत जैन शास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली

21/9/23

Choudhary 21/09/23

5. शौरसेनी प्राकृत साहित्य का इतिहास - डॉ० विश्वनाथ चौधरी एवं डॉ० मंजुबाला, प्राकृत जैन शास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली
6. प्रवचनसार - कल्पना जैन शास्त्री, श्री दि० जैन धर्म शिक्षण संयोजन समिति, गली नं० 4, मलहारगंज, इंदौर
7. कर्पूरमंजरी - साहित्य भंडार, सुभाष बाजार, मेरठ - 250002
8. लीलावई कहा - डॉ० राजाराम जैन, प्राच्य साहित्य प्रकाशन, आरा
9. पाहुडदोहा संग्रह - डॉ० हरेन्द्र प्रसाद सिंह, प्राच्य साहित्य प्रकाशन, गांधीनगर, आरा- 802301

(B) Minor Core Course

B.A. तृतीय वर्ष - सेमेस्टर - V

Sl. No	SEM	Type of Course	Name of Course	Credit	L.T.P.	Marks
5	V	MIC- V	अर्धमागधी आगम साहित्य का मूल सूत्र सट्टक एवं अपभ्रंश ग्रन्थ इकाई- I - उत्तराध्ययन सूत्र - विनयसूत्र, हरिकेशीय संवाद, रहनेमिज्जं, केसिगौतमीय संवाद इकाई- II - कवि राजशेखर कृत कर्पूरमंजरी - संपूर्ण इकाई- III - मुनिराम सिंह विरचित पाहुडदोहा संग्रह - प्रथम 100 गाथा	3	9-1-0 9-1-0 9-1-0	100
			कुल	3	30	

सन्दर्भ ग्रंथ

1. प्राकृत जैनागम साहित्य - डॉ० हरिशंकर पाण्डेय, लक्ष्मी पब्लिकेशन, कतीरा, आरा
2. उत्तराध्ययन सूत्र - श्री आगम प्रकाशन समिति व्यावर (राजस्थान)
3. अर्धमागधी आगम के संकलित गद्य एवं पद्य - डॉ० सी०डी० राय एवं डॉ० हरेन्द्र प्रसाद सिंह, प्राच्य साहित्य प्रकाशन, गाँधी नगर, आरा - 802301
4. अर्धमागधी प्राकृत साहित्य का इतिहास - डॉ० विश्वनाथ चौधरी एवं डॉ० मंजुबाला, प्राकृत जैन शास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली
5. कर्पूरमंजरी - साहित्य भंडार, सुभाष बाजार, मेरठ - 250002
6. पाहुडदोहा संग्रह - डॉ० हरेन्द्र प्रसाद सिंह, प्राच्य साहित्य प्रकाशन, गांधीनगर, आरा- 802301

27/9/23

Choudhary 21/09/23

(A) Major Core Course

B.A. तृतीय वर्ष - सेमेस्टर - VI

Sl. No	SEM	Type of Course	Name of Course	Credit	L.T.P.	Marks
6	VI	MJC- VI	अर्धमागधी आगम के अंग साहित्य जैन दर्शन प्राकृत कथा-साहित्य प्राकृत मुक्तक काव्य अपभ्रंश ग्रन्थ	6		100
			इकाई- I - णायार्धम्मकहाओ - अध्ययन 4, 6 एवं 7 - कूर्म अध्ययन, तुम्बक अध्ययन एवं रोहिणी ज्ञात अध्ययन		9-3-0	
			इकाई- II - आचार्य कुन्दकुन्द कृत पंचास्तिकाय - प्रथम 50 गाथा		9-3-0	
			इकाई- III - आचार्य हरिभद्र सूरि कृत समराइच्चकहा- प्रथम भव		9-3-0	
			इकाई- IV - कवि वत्सलहाल कृत गाथा सप्तसती - प्रथम 100 गाथा		9-3-0	
			इकाई- V - अब्दुल रहमान कृत संदेशरासक - प्रथम दो प्रकरण		9-3-0	
			कुल	6	60	

सन्दर्भ ग्रंथ

1. प्राकृत जैनागम साहित्य - डॉ० हरिशंकर पाण्डेय, लक्ष्मी पब्लिकेशन, कतीरा, आरा
2. णायाधम्मकहा (ज्ञातृधर्म कथा) - श्री आगम प्रकाशन समिति ब्यावर (राजस्थान)

21/9/23

21/09/23

3. अर्धमागधी प्राकृत साहित्य का इतिहास - डॉ० विश्वनाथ चौधरी एवं डॉ० मंजुबाला, प्राकृत जैन शास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली
4. शौरसेनी प्राकृत साहित्य का इतिहास - डॉ० विश्वनाथ चौधरी एवं डॉ० मंजुबाला, प्राकृत जैन शास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली
5. पंचास्तिकाय - श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट, ए. 4, बापू नगर, जयपुर - 302015
6. समराइच्चकहा - डॉ० रमेशचन्द्र जैन, साहित्य भण्डार, सुभाष बाजार, मेरठ
7. गाथासप्तसती - चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी
8. संदेशरासक - हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, पटना
9. प्राकृत कथा-साहित्य - डॉ० कामेश्वर तिवारी, सुरुचि प्रकाशन, वाराणसी
10. प्राकृत साहित्य का इतिहास - डॉ० जगदीशचन्द्र जैन, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी

(B) Minor Core Course

B.A. तृतीय वर्ष - सेमेस्टर - VI

Sl. No	SEM	Type of Course	Name of Course	Credit	L.T.P.	Marks
6	VI	MIC- VI	अर्धमागधी आगम के अंग साहित्य प्राकृत कथा-साहित्य प्राकृत मुक्तक काव्य इकाई- I - णायाधम्मकहाओ - अध्ययन 4, 6 एवं 7 - कूर्म अध्ययन, तुम्बक अध्ययन एवं रोहिणी ज्ञात अध्ययन इकाई- II - आचार्य हरिभद्र सूरि कृत समराइच्चकहा- प्रथम भव इकाई- III - कवि वत्सलहाल कृत गाथा सप्तसती - प्रथम 100 गाथा	3	 9-1-0 9-1-0 9-1-0	100
			कुल	3	30	

सन्दर्भ ग्रंथ

1. प्राकृत जैनागम साहित्य - डॉ० हरिशंकर पाण्डेय, लक्ष्मी पब्लिकेशन, कतीरा, आरा
2. णायाधम्मकहा (ज्ञातृधर्म कथा) - श्री आगम प्रकाशन समिति व्यावर (राजस्थान)
3. अर्धमागधी प्राकृत साहित्य का इतिहास - डॉ० विश्वनाथ चौधरी एवं डॉ० मंजुबाला, प्राकृत जैन शास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली

21/9/23

21/09/23

4. समराइच्चकहा - डॉ० रमेशचन्द्र जैन, साहित्य भण्डार, सुभाष बाजार, मेरठ
5. गाथासप्तसती - चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी
6. प्राकृत कथा-साहित्य - डॉ० कामेश्वर तिवारी, सुरुचि प्रकाशन, वाराणसी
7. प्राकृत साहित्य का इतिहास - डॉ० जगदीशचन्द्र जैन, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी

(A) Major Core Course

B.A. चतुर्थ वर्ष - सेमेस्टर - VII

Sl. No	SEM	Type of Course	Name of Course	Credit	L.T.P.	Marks
7	VII	MJC- VII	जैन दर्शन एवं सट्टक इकाई- I - उमास्वाति विरचित तत्त्वार्थ सूत्र - प्रथम, सप्तम एवं दशम् अध्याय इकाई- II - आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती कृत द्रव्य संग्रह - संपूर्ण इकाई- III - वसुनन्दी श्रावकाचार - जीव तत्त्व एवं अजीव तत्त्व का वर्णन इकाई- IV - कार्तिकेयानुप्रेक्षा - प्रथम दो अधिकार इकाई- V - कवि नयचन्द सूरि कृत रम्भामंजरी - प्रथम दो यवनिका	6	9-3-0 9-3-0 9-3-0 9-3-0 9-3-0	100
			कुल	6	60	

सन्दर्भ ग्रंथ

1. तत्त्वार्थ सूत्र - पं० सुखलाल संघवी, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, आई.टी.आई. रोड, वाराणसी
2. द्रव्य संग्रह - बलभद्र जैन, कुन्दकुन्द भारती प्रकाशन, 18 बी, स्पेशल इन्डस्ट्रीयल ऐरिया, नई दिल्ली- 110067
3. वसुनन्दी श्रावकाचार - डॉ० भागचंद्र जैन, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, आई.टी.आई. रोड, वाराणसी

21/9/23 21/09/23

4. आजीविओवासए सकडालपुतस्स कहा - डॉ० दुधनाथ चौधरी, प्रकाशक- प्राच्य विद्या अध्ययन केन्द्र, कैलाश नगर, गोढ़ना रोड, आरा - 802301
5. कार्तिकेयानुप्रेक्षा - पं० महेन्द्र कुमार पाटनी, दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट, सोनगढ़, सौराष्ट्र
6. भगवान् महावीर का मूल उपदेश - डॉ० हरेन्द्र प्रसाद सिंह, प्राच्य साहित्य प्रकाशन, गाँधी नगर, आरा
7. रम्भामंजरी - डॉ० ब्रजमोहन पाण्डेय 'नलिन', अशोक नगर, गया
8. मध्यकालीन जैन सट्टक नाटक - डॉ० राजाराम जैन, प्राच्य साहित्य प्रकाशन, आरा
9. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री, तारा पब्लिकेशन, सिगरा, वाराणसी

(B) Minor Core Course

B.A. चतुर्थ वर्ष - सेमेस्टर - VII

Sl. No	SEM	Type of Course	Name of Course	Credit	L.T.P.	Marks
7	VII	MIC- VII	जैन दर्शन एवं सट्टक	3		100
			इकाई- I - उमास्वाति विरचित तत्त्वार्थ सूत्र - प्रथम, सप्तम एवं दशम् अध्याय		9-1-0	
			इकाई- II - आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती कृत द्रव्य संग्रह - संपूर्ण		9-1-0	
			इकाई- III - कवि नयचन्द सूरि कृत रम्भामंजरी - संपूर्ण		9-1-0	
			कुल	3	30	

सन्दर्भ ग्रंथ

1. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री, तारा पब्लिकेशन, सिगरा, वाराणसी
2. तत्त्वार्थ सूत्र - पं० सुखलाल संघवी, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, आई.टी.आई. रोड, वाराणसी
3. द्रव्य संग्रह - बलभद्र जैन, कुन्दकुन्द भारती प्रकाशन, 18 बी, स्पेशल इन्डस्ट्रीयल ऐरिया, नई दिल्ली- 110067

21/9/23

21/09/23

4. आजीविओवासए सकडालपुतस्स कहा - डॉ० दुधनाथ चौधरी, प्रकाशक- प्राच्य विद्या अध्ययन केन्द्र, कैलाश नगर, गोढ़ना रोड, आरा - 802301
5. रम्भामंजरी - डॉ० ब्रजमोहन पाण्डेय 'नलिन', अशोक नगर, गया
6. भगवान् महावीर का मूल उपदेश - डॉ० हरेन्द्र प्रसाद सिंह, प्राच्य साहित्य प्रकाशन, गाँधी नग़र, आरा
7. मध्यकालीन जैन सट्टक नाटक - डॉ० राजाराम जैन, प्राच्य साहित्य प्रकाशन, आरा

(A) Major Core Course

B.A. चतुर्थ वर्ष - सेमेस्टर - VIII

Sl. No	SEM	Type of Course	Name of Course	Credit	L.T.P.	Marks
8	VIII	MJC- VIII	जैन दर्शन द्वयाश्रय काव्य नाटक एवं प्रकरण	6		100
			इकाई- I - समणसुत्तं - अनेकान्त सूत्र, स्याद्वाद सप्तभंगी, प्रमाणसूत्र, नय सूत्र		9-3-0	
			इकाई- II - आचार्य हेमचन्द्र कृत कुमारपाल चरियं - संपूर्ण		9-3-0	
			इकाई- III - कवि राजशेखर कृत विद्धशालभंजिका -		9-3-0	

Ml
21/9/23

Choudhary
21/09/23

			प्रथम एवं द्वितीय अंक इकाई- IV - महाकवि शूद्रक विरचित मृच्छकटिकम् - प्राकृत अंश इकाई- V - महाकवि कालिदास कृत विक्रमोर्वशीयं - प्रथम अंक		9-3-0 9-3-0	
			कुल	6	60	

सन्दर्भ ग्रंथ

1. समणसुत्तं - प्रकाशक - सर्व सेवा संघ, राजघाट, काशी (उ०प्र०)
2. कुमारपाल चरियं - डॉ० राजाराम जैन, प्राच्य साहित्य प्रकाशन, आरा
3. विद्वशालभंजिका - रामाकांत त्रिपाठी, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
4. मृच्छकटिकम् - डॉ० जगदीशचंद्र मिश्र, सुर भारती प्रकाशन, वाराणसी
5. विक्रमोर्वशीयं - कालिदास, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
6. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री, तारा पब्लिकेशन, सिगरा, वाराणसी
7. प्राकृत साहित्य का इतिहास - डॉ० जगदीशचन्द्र जैन, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी

(B) Minor Core Course

B.A. चतुर्थ वर्ष - सेमेस्टर - VIII

Sl. No	SEM	Type of Course	Name of Course	Credit	L.T.P.	Marks
8	VIII	MIC- VIII	जैन दर्शन द्वयाश्रय काव्य नाटक एवं प्रकरण इकाई- I - समणसुत्तं - अनेकान्त सूत्र, स्याद्वाद सप्तभंगी, प्रमाणसूत्र, नय सूत्र इकाई- II - आचार्य हेमचन्द्र कृत कुमारपाल चरियं - संपूर्ण इकाई- III - कवि राजशेखर कृत विद्वशालभंजिका -	3	9-1-0 9-1-0 9-1-0	100

21/9/23

21/09/23

			संपूर्ण			
			कुल	3	30	

सन्दर्भ ग्रंथ

1. समणसुत्तं - प्रकाशक - सर्व सेवा संघ, राजघाट, काशी (उ०प्र०)
2. कुमारपाल चरियं - डॉ० राजाराम जैन, प्राच्य साहित्य प्रकाशन, आरा
3. विद्वशालभंजिका - रामाकांत त्रिपाठी, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
4. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री, तारा पब्लिकेशन, सिगरा, वाराणसी
5. प्राकृत साहित्य का इतिहास - डॉ० जगदीशचन्द्र जैन, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी

Dr. Manju Bala
Director, Prakrit
Jainology, Vaishali
E-mail Vaishaliinstitute@gmail.com

Dr. Dudh Nath Choudhary
HoD. Dept. of Prakrit &
Jainology.
VKSU. Ara.

Email ID.
dncj12345678@gmail.com